This question paper contains 3 printed pages.

B.A. (Pt. - III)

3102 - I

Roll No. ....

Hindi Lit. - I

B.A. (Part - III) EXAMINATION - 2020

(Faculty of Arts)

[Also Common with Subsidiary Paper of B.A. (Hons.) Part - III]

(Three - Year Scheme of 10+2+3 Pattern)

हिन्दी साहित्य

प्रथम प्रश्न – पत्र

(आधुनिक काव्य)

Time Allowed: Three Hours

Maximum Marks: 100

प्रश्नों के उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न–पत्र पर रोल नम्बर अवश्य लिखें। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्यक प्रश्न हेतु निर्धारित अंक उसके सामने अंकित हैं।

किसी भी परीक्षार्थी को पूरक उत्तर–पुस्तिका नहीं दी जाएगी। अतः परीक्षार्थियों को चाहिए कि वे मुख्य उत्तर–पुस्तिका में ही समस्त प्रश्नों के उत्तर सही ढंग से लिखें।

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिएः– 10x4=40

(क) रो रो चिन्ता–सहित दिन को राधिका थीं बिताती।
आँखों को थीं सजल रखतीं उन्मना थीं दिखाती।
शोभा वाले जलद–वपु की हो रही चातकी थीं।
उत्कण्ठा थी परम प्रबला वेदना वर्द्धित थी।।
बैठी खिन्ना यक दिवस वे गेह में थीं अकेली।
आ के आँसू दृग–युगल में थे धरा को भिगोते।
आई धीरे इस सदन में पुष्प–सद्गंध को ले।
प्राप्तः आली सुपवन इसी काल वातायनों से।।

अथवा

सिद्धि–हेतु स्वामी गये, यह गौरव की बात ;
पर चोरी–चोरी गये, यही बड़ा व्याघात।
सखि, वे मुझसे कहकर जाते,
कह, तो क्या मुझको वे अपनी पथ–बाधा ही पाते?
मुझको बहुत उन्होंने माना,
फिर क्या पूरा पहचाना?

मैंने मुख्य उसी को जाना,
जो वे मन में लाते।
सखि वे मुझसे कहकर जाते।

(ख) झंझा झकोर गर्जन था
बिजली थी, नीरदमाला,
पाकर इस शून्य हृदय को
सब ने आ डेरा डाला।
घिर जातीं प्रलय घटाएँ
कुटिया पर आ कर मेरी,
तम चूर्ण नरस जाता था
छा जाती अधिक अँधेरी।

अथवा

क्षुब्ध जल शिखरों को जब वात
सिंधु में मथकर फेनाकार,
बुलबुलों का व्याकुल संसार,
बना, बिथुरा देता अज्ञात;
उठा तब लहरों से कर कौन
न जाने मुझे बुलाता मौन।

(ग) और दूर कचरा जलाने वाली कल की उद्दंड चिमनियों को, जो धुआँ यों उगलती हैं माना मात्र से अहेरी को हरा देंगी बावरे अहेरी रे।

कुछ भी अवध्य नहीं तुझे, सब आखेट है;
एक बस मेरे मन–विवर में दुबकी कलौंस को
दुबकी ही छोड़ कर क्या तू चला जायेगा?

अथवा

जिस देश प्राणों की जलन में
एक नूतन स्वप्न का संचार हो,
ओ हृदय मेरे, उस ज्वलन की भूमि में बिछ जा स्वयं ही,
ओ तड़प कर उस निराले देश में तू खोल आँखें।
देख–जलते स्पन्दनों में क्या उलझता ही गया है।

(घ) मगर तुम खुद सोचो कि डबरे में
डूबता हुआ सूरज

खेत की मेड़ पर खड़े आदमी को
एक लम्बी परछाई के सिवा और क्या दे सकता है
काफी दुविधा के बाद
मुझे यह सच्चाई सकारनी पड़ी है
यद्यपि यह सही है कि सूरज
तुम्हारी जेब–घड़ है।

परिन्दे अब भी पर तोले हुए हैं,
हवा में सनसनी घोले हुए हैं।
तुम्हीं कमजोर पड़ते जा रहे हो,
तुम्हारे ख़्वाब तो शोले हुए हैं।

2. 'प्रिय प्रवास में जिस प्रेम और विरह का वर्णन है, यह व्यक्तिगत से अधिक परोपकार आश्रित है।' इस कथन के आलोक में 'प्रिय प्रवास' की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

मैथिलीशरण गुप्त ने 'यशोधरा' काव्य में नारी स्वाभिमान को अभिव्यक्ति प्रदान की है। इस कथन स्पष्ट करते हुए यशोधरा का चरित्र चित्रण कीजिए। 15

3. 'आँसु' काव्य में व्यक्त वेदन को स्पष्ट करते हुए, प्रसाद के काव्य की विशेषताओं को रेखांकित कीजिए। 15

अथवा

"अज्ञेय प्रयोगवादी कविता के सबसे प्रमुख कवि हैं।" सिद्ध कीजिए। 15

4. 'मोचीराम' कविता को मूल भाव स्पष्ट करते हुए सुदामा पाण्डे 'धूमिल' के काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

सिद्ध कीजिए कि मुक्तिबोध नई कविता के प्रतिनिधि कवि हैं। 15

5. द्विवेदी युगीन कविता की विशेषताओं का वर्णनप कीजिए। 15

अथवा

'छायावाद' के नामकरण पर प्रकाश डालते हुए छायावादी कविता की प्रमुख विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए। 15